Subject :- Sociology Date :- 17/07/2020
Class :- D-III (H) Paper :- 7th
Topic :- सामाजिक विघटन तथा इसके कारण
By :- Dr. Shyamanand Choudhary
Guest Teacher, Marwari College, Darbhanga
Online Study Material No :- 116

सामाजिक विघटन

विभिन्न सामाजिक वैज्ञानिकों ने भिन्न-भिन्न रूपों में सामाजिक विघटन की अवधारणा का वर्णन किया है। कुछ विद्वानों के अनुसार सामाजिक विघटन समाज की एक खास स्थिति का द्योतक है। इसके विपरीत Elliott & Merrill तथा Newmeyer के अनुसार सामाजिक विघटन एक प्रक्रिया है। सामाजिक विघटन को परिभाषित करते हुए Fairchild ने अपनी पुस्तक 'Dictionary of Sociology' में लिखा है "सामाजिक विघटन का अर्थ सुस्थापित व्यवहार प्रतिमानों, संस्थाओं तथा नियंत्रण की क्रियाशीलता में असंतुलन तथा अव्यवस्था का उत्पन्न हो जाना है।" (Social disorganization is the derangement and malfunctioning of established group behaviour patterns, institutions or controls)

इस परिभाषा से यह पता चलता है कि मुख्यतः तीन अवस्थाओं में सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है।

(A) जब व्यक्ति सुस्थापित व्यवहार प्रतिमानों के अनुसार व्यवहार नहीं करते।

(B) जब संस्थाओं की क्रियाशीलता में अव्यवस्था उत्पन्न होती है या संस्थाएँ मानव आवश्यकताओं की पूर्ति करने में असमर्थ सिद्ध होती हैं।

(C) जब सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्था प्रभावहीन हो जाती है। Landis ने भी बताया है कि "सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्था का भंग होना और अव्यवस्था तथा भ्रम उत्पन्न हो जाना ही सामाजिक विघटन है।" इसी तरह Thomas & Znaniecki ने भी बताया है कि "सामाजिक विघटन समूह के सदस्यों पर से समाज के मान्य नियमों के प्रभाव का कम होना है।" (Social disorganization is a decrease of the influence of existing social rules of behaviour upon individual members of the group)

M.N. Neumeyer ने सामाजिक विघटन को एक असंतुलित दशा और प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है और लिखा है "सामाजिक विघटन केवल एक असंतुलित दशा ही नहीं है बल्कि यह मुख्यतः एक प्रक्रिया है। इस प्रकार यह उन घटनाओं और परिस्थितियों को प्रदर्शित करती है जो व्यक्तियों और समूहों

Scanned with CamScanner

की सामाजिक क्रियाशीलता में बाधा उत्पन्न करती है।"
(Social disorganization is not merely a maladjusted condition, for it is chiefly a process. As much it represents a series of events & occurences. That it is to disrupt the normal functioning of persons & groups)
इस परिभाषा से यह पता चलता है कि सामाजिक विघटन एक प्रक्रिया है। साथ ही Neumeyer के अनुसार सामाजिक विघटन समाज की 'असंतुलित दशा' के द्योतक है। इनके अनुसार जब व्यक्ति और समूहों की सामाजिक क्रियाशीलता में बाधा उत्पन्न होती है तब इसी स्थिति को सामाजिक विघटन कहा जाता है।
Ellwood & Merrill ने भी सामाजिक विघटन को एक प्रक्रिया माना है और अपनी पुस्तक 'Social Disorganization' में लिखा है सामाजिक विघटन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा समूह में सदस्यों के सम्बन्ध टूट जाते है या भंग हो जाते है।
(Social disorganization is the process by which the relationship between members of group are broken or dissolved).

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जब लोग सुस्थापित व्यवहार प्रतिमानों के अनुसार व्यवहार नहीं करते हैं, विभिन्न सामाजिक संस्थाएँ मनुष्यों की आवश्यकताओं को पूरा करने में असफल हो जाती है, सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्था प्रभावहीन हो जाती है, व्यक्तियों की प्रस्थिति और भूमिका में अनिश्चितता की स्थिति उत्पन्न होती है, मतैक्य का अभाव होता है, लोग व्यक्तिगत स्वार्थ पर अधिक बल देने लगते है, विभिन्न संस्थाओं में संघर्ष उत्पन्न होता है, एक समिति के कार्य दूसरी समिति को हस्तांतरित हो जाते है, परिवर्तन तीव्र गति से होने लगता है, पवित्र तत्वों का ह्रास होने लगता है, मौलिक सुख सम्बन्धी व्यवहार में वृद्धि होती है, लोगों का एक-दूसरे पर अविश्वास बढ़ जाता है, अशांति उत्पन्न करने वाले तत्वों में वृद्धि होती है, आत्महत्या, अपराध, विवाह-विच्छेद, वेश्यावृत्ति आदि समस्याओं में वृद्धि होती है तब इसी स्थिति को सामाजिक विघटन कहा जाता है।

Scanned with CamScanner

सामाजिक विघटन के कारण

③

विभिन्न विचारकों ने सामाजिक विघटन के लिए निम्नलिखित कारणों को उत्तरदायी ठहराया है।

Jones के अनुसार सामाजिक विघटन के अधिकतर कारण निश्चयवादी भ्रांतियों (Deterministic fallacies) पर आधारित है। उदाहरणार्थ - धर्मशास्त्रियों के अनुसार ईश्वर निंदा, धर्म में अविश्वास, पवित्रता में कमी, विवाह-विच्छेद आदि सामाजिक विघटन के कारण है। इसके विपरीत अर्थशास्त्रियों के अनुसार निर्धनता, बेकारी, व्यापार चक्र में तेजी, धन का असमान वितरण, आर्थिक हितों की प्रबलता और वर्ग संघर्ष सामाजिक विघटन के मुख्य कारण है। इसी तरह जीवशास्त्रियों के अनुसार अपर्याप्त पोषण, बुरा स्वास्थ्य, मानसिक रोगों और जनसंख्या में अधिक वृद्धि होना सामाजिक विघटन के कारण है। इसीतरह भौगोलिकवादी सामाजिक विघटन के लिए प्रतिकूल भौगोलिक दशाओं को उत्तरदायी मानते है।

Elliott & merill ने सामाजिक विघटन के कारणों का उल्लेख किया है जिसका समर्थन Gillin & Gillin, Sorokin, R.K. Merton आदि ने भी किया है। ये कारण निम्नलिखित है :-

1) सामाजिक परिवर्तन में असंतुलन → तीव्र सामाजिक परिवर्तन के दौरान अधिकतर संस्थाएँ नवीन परिस्थितियों से अनुकूलन नहीं कर पाती है। फलस्वरूप वे समाज को विघटित होने से रोकने में असफल हो जाती है। साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि तीव्र सामाजिक परिवर्तन के दौरान संस्कृति में भी तीव्रगति से परिवर्तन होता है। जब संस्कृति में तीव्र गति से परिवर्तन होता है तब परम्परागत आदर्शों और नवीन आवश्यकताओं के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। बाद में इसी संघर्ष में वृद्धि के कारण समाज विघटित होने लगता है।

(2) सामाजिक मनोवृत्तियों में परिवर्तन → जब लोगों की मनोवृत्तियों में परिवर्तन होता है और लोग सामाजिक नियमों से अप्रभावित रहते हैं तब सामाजिक विघटन की स्थिति उत्पन्न होती है। आज लोगों की मनोवृत्तियों में तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है। भारत में स्त्रियों का नौकरी करना, स्त्रियों का पति के साथ समान अधिकारों का दावा करना, अनुचित साधनों द्वारा अधिक से अधिक धन एकत्रित करना, श्रमिकों द्वारा हड़तालों को सफलता का एक मात्र साधन समझना, बच्चों द्वारा अधिकाधिक अधिकारों की माँग करना

Scanned with CamScanner

(A)

आदि हमारी मनोवृत्तियों में परिवर्तन का द्योतक है और इस परिवर्तन के कारण समाज विघटित होने लगा है।

(3) सामाजिक मूल्यों में संघर्ष → जब सामाजिक मूल्यों के सामान्य अर्थों में परिवर्तन हो जाता है तब विभिन्न मूल्यों में संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होती है। Turner ने भी इस विचार का समर्थन किया है और लिखा है "सामाजिक विघटन सामाजिक मूल्यों के बीच होने वाले संघर्ष की ही स्थिति है।"

(4) सामाजिक संकट → सामाजिक संकट व्यक्तियों की मानसिक दशा पर प्रतिकूल प्रभाव डालकर अनेक प्रकार से सामाजिक विघटन की समस्या उत्पन्न करते हैं। सामाजिक संकट दो प्रकार के होते हैं:-

(क) आकस्मिक संकट और (ख) संचयी संकट — इन दोनों प्रकार के संकटों की स्थिति में व्यक्ति अनुकूलन स्थापित करने में असफल होता है और समाज विघटित होने लगता है।

सामाजिक विघटन के कुछ अन्य कारण भी हैं जो निम्न हैं:-

(5) औद्योगिकरण → औद्योगिकरण के कारण आर्थिक शोषण, आय के असमान वितरण, कीमतों का उतार-चढ़ाव, श्रमिक संघर्ष, अनैतिकता को प्रोत्साहन मिलना, अपराध, बाल-अपराध, बेरोजगारी, मद्यपान आदि समस्याएँ उत्पन्न हुई जिसके कारण समाज विघटित होने लगा है।

(6) निर्धनता → निर्धनता की स्थिति में लोगों के सामने नैतिक मूल्यों का कोई महत्व नहीं रह जाता। स्त्री-पुरुष और बच्चे जो निर्धनता के शिकार होते हैं। समाज विरोधी आचरणों द्वारा भी अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगते हैं। फलस्वरूप समाज विघटित होने लगता है।

(7) बेरोजगारी → बेरोजगारी की स्थिति में निर्धनता को प्रोत्साहन मिलता है। ऐसी परिस्थिति में बेरोजगार व्यक्ति विभिन्न प्रकार के अपराधी व्यवहारों द्वारा भी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयत्न करते हैं। फलस्वरूप समाज विघटित होने लगता है।

Dr. S.N. Choudhary
Marwari College
Darbhanga

Scanned with CamScanner